International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue III, May – June 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

आपदा प्रबंधन एवं प्रकार : भारत के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी मेरावी
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग
शासकीय स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय त्योंथर, रीवा (म.प्र.)

सारांश :– प्राकृतिक आपदाएँ प्राकृतिक रूप से होने वाली शारीरिक घटनाएँ हैं जो या तो तेज या धीमी गति से शुरू होने वाली घटनाओं के कारण होती हैं जिनका मानव स्वास्थ्य पर तत्काल प्रभाव पड़ता है और द्वितीयक प्रभाव आगे चलकर मृत्यु और पीड़ा का कारण बनते हैं। ये आपदाएँ हो सकती हैं जैसे रू– भूभौतिकीय (जैसे भूकंप, भूस्खलन, सुनामी और ज्वालामुखी गतिविधि), जल विज्ञान (जैसे हिमस्खलन और बाढ़), जलवायु संबंधी (जैसे अत्यधिक तापमान, सूखा और जंगल की आग), मौसम संबंधी (जैसे चक्रवात और तूफान लहरें), जैविक (जैसे रोग महामारी और कीट पशु विपत्तियाँ)। आपदा प्रबंधन का उद्देश्य खतरों से संभावित नुकसान को कम करना या उससे बचना, आपदा के पीड़ितों को त्वरित और उचित सहायता सुनिश्चित करना और तेजी से और प्रभावी वसूली प्राप्त करना है। भारत सरकार सभी सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों और लोगों की भागीदारी के निरंतर और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से प्राकृतिक और मानव–निर्मित आपदाओं से होने वाली क्षति और विनाश को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय संकल्प को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

मुख्यशब्द :– आपदा प्रबंधन**,** भूकंप, भूस्खलन, सुनामी और ज्वालामुखी।

परिचय :–

जब अचानक घटनाओं के कारण समाज प्रभावित होता है, जिससे समुदाय व स्थानीय संसाधनों को नुकसान पहुंचता है, तो हम इस स्थिति को आपदा के रूप में कह सकते हैं। सूखा, बाढ़, चक्रवाती तूफानों, भूकम्प, भूस्खलन, वनों में लगने वाली आग, ओलावृष्टि, टिड्डी दल और ज्वालामुखी फटने जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है, न ही इन्हें रोका जा सकता है, लेकिन इनके प्रभाव को एक सीमा तक जरूर कम किया जा सकता है। जिससे कि जान–माल का कम से कम नुकसान हो। यह कार्य तभी किया जा सकता है, जब सक्षम रूप से आपदा प्रबंधन का सहयोग मिले। प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं से अनेक लोगों की मृत्यु हो जाती है, इससे सर्वाधिक जाने चली जाती है। आपदा के खतरे जोखिम एवं शीघ्र चपेट में आने वाली स्थितियों के मेल से उत्पन्न होते हैं। यह कारक समय और भौगोलिक दृश्य दोनों पहलुओं से बदलते रहते हैं। विकासशील देश आपदा का भारी मूल्य चुकाते हैं– आपदा के कारण 15 : मौतें विकासशील देशों में होती हैं और प्राकृतिक आपदा से होने वाली मौतें 20 गुना ज्यादा हैं।

आपदा के प्रकार :

1. प्राकृतिक आपदा :

एक प्राकृतिक आपदा एक स्वाभाविक परिणाम है (जैसे ज्वालामुखी विस्फोट या भूकंप) जो मनुष्य को प्रभावित करते हैं। उपर्युक्त आपातकालिन प्रबंधन की कमी द्वारा मानव सुभेद्यता से वित्तीय, पर्यावरण सम्बन्धी या मानवीय प्रभाव होतें हैं। परिणामी हानि या विरोध आपदा जनसँख्या के सहयोग की क्षमता पर निर्भर करती है। समझ निर्माण में केंद्रित है आपदा के समय खतरों के होने से जोखिम होता है[6]। इसलिए प्राकृतिक खतरा कभी भी ऐसे क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा नहीं होगी।

2. मानव निर्मित आपदा :

मानवीय कार्य से निर्मित आपदा लापरवाही, भूल या व्यवस्था की असफलता मानव – निर्मित आपदा कही जाती है। मानव निर्मित आपदा तकनीकि या सामाजिक कहे जाते हैं। तकनीकि आपदा तकनीक की असफलता के परिणाम हैं जैसे इंजीनियरिंग असफलता, यातायात आपदा या पर्यावरण आपदा, समेत सामाजिक आपदा एक मजबूत मानवीय प्रेरणा है, जैसे आपराधिक क्रिया, भगदड़, दंगा और युद्ध विवादित है, क्योंकि घटनायें बिना मानवीय सहभागिता के आपदा या खतरा नहीं है।

आपातकालीन प्रबंधन प्रक्रिया एक नीतिगत प्रक्रिया न होकर एक रणनीतिक प्रक्रिया है। अतः यह आमतौर पर संगठन में कार्यकारी स्तर तक ही सीमित रहती है। सामान्य रूप से इसकी कोई प्रत्यक्ष शक्ति नहीं है लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि एक संगठन के सभी भाग एक सांझे लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें। यह सलाहकार के रूप में या कार्यों के समन्वय के लिए कार्य करता है। प्रभावी आपात प्रबंधन संगठन के सभी स्तरों पर आपातकालीन योजनाओं के संपूर्ण एकीकरण और इस समझ पर निर्भर करता है कि संगठन के

निम्नतम स्तर आपात स्थिति के प्रबंधन और ऊपरी स्तर से अतिरिक्त संसाधन और सहायता प्राप्त करने के लिए जिम्मेदार हैं।

आपातकालीन प्रबंधन की प्रक्रिया के चार चरण है :
न्यूनीकरण, तत्परता, प्रतिक्रिया और उबरना। आपात प्रबंधन में चार चरणों की एक ग्राफिक प्रस्तुति।

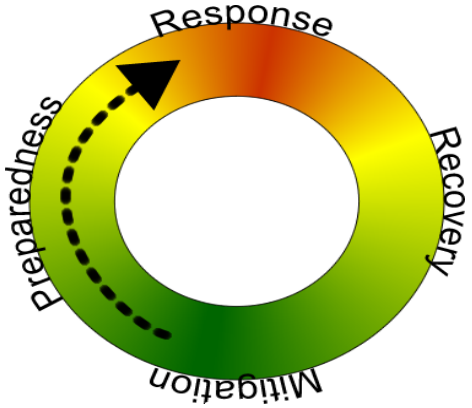

आपदा प्रबंधन के उद्देश्य :–
आपदा प्रबंधन का उद्देश्य खतरों से संभावित नुकसान को कम करना या उससे बचना, आपदा के पीड़ितों को त्वरित और उचित सहायता सुनिश्चित करना और तेजी से और प्रभावी वसूली प्राप्त करना है।

आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ का कार्य :
नियंत्रण कक्ष की स्थापना करना, चेतावनी का प्रसार करना, आपदा के दौरान राहत और बचाव उपायों की निगरानी, तैयारी का निर्धारण, मानक–प्रचालन प्रक्रिया की तैयारी एवं संकलन, राहत गोदाम तथा अन्य विभागों में आपदा की तैयारी से संबंधित सामग्रियों के वितरण, आपदा की संवेदनशीलता का मूल्यांकन करना है।

आपदा प्रबंधन एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य आपदा से होने वाले हानिकारक प्रभावों को कम करना और उनका प्रबंधन करना है। यह एक संगठित दृष्टिकोण है जिसमें सरकार, संगठन, सामुदायिक संगठन, और व्यक्तियों का सहयोग होता है। इसका मुख्य उद्देश्य होता है आपदा के दौरान जीवन, संपत्ति, और पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करना। आपदा प्रबंधन यह है कि हम उक्त आपदा के मानवीय, भौतिक, आर्थिक या पर्यावरणीय प्रभावों से कैसे निपटते हैं , यह वह प्रक्रिया है कि हम बड़ी विफलताओं के प्रभावों के लिए कैसे तैयारी करते हैं, प्रतिक्रिया देते हैं और सीखते हैं[६]। हालाँकि आपदाएँ अक्सर प्रकृति के कारण होती हैं, फिर भी आपदाएँ मानवीय उत्पत्ति की हो सकती हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित आपदा, किसी समुदाय या समाज के कामकाज में गंभीर व्यवधान है, जिसमें व्यापक मानव, सामग्री, आर्थिक या पर्यावरणीय प्रभाव शामिल होते हैं जो प्रभावित समुदाय या समाज की अपने संसाधनों का उपयोग करने की क्षमता से अधिक होते हैं।

प्राकृतिक आपदाएँ प्राकृतिक रूप से होने वाली शारीरिक घटनाएँ हैं जो या तो तेज या धीमी गति से शुरू होने वाली घटनाओं के कारण होती हैं जिनका मानव स्वास्थ्य पर तत्काल प्रभाव पड़ता है और द्वितीयक प्रभाव आगे चलकर मृत्यु और पीड़ा का कारण बनते हैं। ये आपदाएँ हो सकती हैं जैसे – भूभौतिकीय (जैसे भूकंप, भूस्खलन, सुनामी और ज्वालामुखी गतिविधि), जल विज्ञान (जैसे हिमस्खलन और बाढ़), जलवायु संबंधी (जैसे अत्यधिक तापमान, सूखा और जंगल की आग), मौसम संबंधी (जैसे चक्रवात और तूफान लहरें), जैविक (जैसे रोग महामारी और कीट पशु विपत्तियाँ)।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेड क्रॉस एंड रेड क्रिसेंट सोसाइटीज के अनुसार मानव निर्मित आपदाएँ मनुष्यों द्वारा होने वाली घटनाएँ हैं जो मानव बस्तियों में या उसके करीब घटित होती हैं जो अक्सर पर्यावरणीय या तकनीकी आपात स्थितियों के परिणामस्वरूप होती हैं। इसमें शामिल हो सकते हैं जैसे वातावरण संबंधी मान भंग, प्रदूषण, दुर्घटनाएँ (उदाहरण के लिए औद्योगिक, तकनीकी और परिवहन जिसमें आमतौर पर खतरनाक सामग्रियों का उत्पादन, उपयोग या परिवहन शामिल होता है) ।

आपदा प्रतिक्रिया राहत :
आपदा प्रबंधन के इस चरण में समन्वित बहु–एजेंसी प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण है ताकि आपदा के प्रभाव को कम किया जा सके और राहत गतिविधियों सहित इसके दीर्घकालिक परिणामों को कम किया जा सके। इनमें हैं–

1. बचाव।
2. पुनर्वास।
3. भोजन और पानी का प्रबंध करें।
4. आपातकालीन स्वास्थ्य देखभाल का प्रावधान।
5. रोग और विकलांगता की रोकथाम।
6. दूरसंचार, परिवहन जैसी महत्वपूर्ण सेवाओं की मरम्मत करना।

आपदा प्रबंधन में भारत की भूमिका :
भारत सरकार सभी सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों और लोगों की भागीदारी के निरंतर और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से प्राकृतिक और मानव–निर्मित आपदाओं से होने

वाली क्षति और विनाश को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय संकल्प को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

भारत में आपदा प्रबंधन :

मौसम संबंधी दृष्टिकोण से, भारत विशेष रूप से हिमालय के नीचे (खुले हिंद महासागर का सामना करने वाले) के साथ–साथ अपनी भू–जलवायु परिस्थितियों और विविध परिदृश्यों के कारणों से प्राकृतिक आपदाओं की चपेट में आ जाते हैंय उदाहरण के लिए,कृपश्चिमी भारत के अधिक समशीतोष्ण से प्रभावित शुष्क क्षेत्रों में गर्मियों के दौरान गंभीर सूखे, अकाल औरध्या जंगल की आग का खतरा होता है। उत्तर के अधिक दूरस्थ, पहाड़ी क्षेत्र, विशेष रूप से हिमालयी राज्य, सर्दियों में विनाशकारी भूस्खलन, बाढ़ और शुष्क अवधि के दौरान बड़े भूस्खलन का अनुभव कर सकते हैं। यह उन भूकंपों के अन्तर्गत आते है, जो चट्टानों के गिरने, मिट्टी के धंसने और आकस्मिक बाढ़ के कारण तबाही की संभावना को बढ़ाते हैं। मानसून के दौरान, दक्षिण भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्र जो आम तौर पर चक्रवात या सुनामी से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

भारत में आपदा प्रबंधन योजना :

1 जून 2016 को, भारत सरकार ने भारत की आपदा प्रबंधन योजना शुरू की, जो आपदाओं की रोकथाम, शमन और प्रबंधन के लिए सरकारी संस्थाओं को एक रूपरेखा और दिशा प्रदान करना चाहती है। 2005 के आपदा प्रबंधन अधिनियम के लागू होने के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर यह पहली योजना है।

निष्कर्ष :–

आपदा प्रबंधन भारत के नीतिगत ढांचे में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि आपदाओंध्आपदाओं के कारण निर्धन और वंचित लोग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। आपदाएँ सामाजिक–आर्थिक विकास को अवरुद्ध करती हैं, इसके अतिरिक्त निर्धनों को और निर्धन बनाती हैं तथा दुर्लभ संसाधनों को विकास से पुनर्वास और पुनर्निर्माण की ओर ले जाती हैं। इन सभी कारकों के कारण भारत ने शमन और अनुकूलन संसाधनों में निवेश किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. https:// hi-wikipidea-org भारत में आपदा प्रबंधन।
2. इलियट डी. आपदा और संकट प्रबंधन। द हैंडबुक ऑफ सिक्योरिटी 2014 (पीपी. 813–836) में। पालग्रेव मैकमिलन यूके।
3. इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेड क्रॉस और रेड क्रिसेंट सोसाइटीज। आपदाओं के प्रकार 02 जनवरी 2017.
4. आपदा प्रबंधन : फिजियोपीडिया।